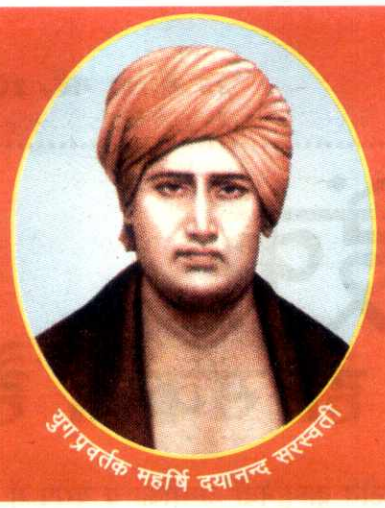

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 12 अंक 46 कुल पृष्ठ-8 25 से 31 मई, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 ज्ये. कृ.-14

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग की महत्त्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

देश में पूर्ण शराबबन्दी की माँग को लेकर देश की राजधानी दिल्ली में विशाल रैली का आयोजन किया जायेगा

हैदराबाद में आयोजित हुए राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन के निर्णयों का क्रियान्वयन प्रारम्भ

प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के विवाद सुलझाने तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के एकीकरण के लिए पूर्ण सहयोग का निर्णय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक 21 मई, 2017 को सभा मुख्यालय "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 पर उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। इस बैठक में देश के विभिन्न प्रदेशों से सैकड़ों की संख्या में प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिनमें मुख्य रूप से स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी रामवेश जी, स्वामी ओमवेश जी, स्वामी विजयवेश जी, स्वामी सवितानन्द सरस्वती रांची, प्रो. श्योताज सिंह, श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्रीमती गायत्री मीणा, बहन प्रवेश एवं बहन पूनम आर्या, स्वामी सम्यक क्रांतिवेश महाराष्ट्र, स्वामी सोम्यानन्द जी, श्री हरि सिंह सैनी हरियाणा, श्री अश्विनी कुमार शर्मा पंजाब, पं. माया प्रकाश त्यागी, वैद्य इन्द्रदेव दिल्ली, श्री रामानन्द प्रसाद बिहार, डॉ. जय प्रकाश भारती उत्तर प्रदेश, श्री रामसिंह आर्य राजस्थान, श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव मध्य प्रदेश विदर्भ, श्री केशव सिंह मध्य भारत, डॉ. कमल नारायण आर्य छत्तीसगढ़, श्री पूर्णचन्द्र आर्य झारखण्ड, श्री जगदीश सूर्यवंशी महाराष्ट्र, श्री भंवर लाल आर्य जोधपुर, संतोष कुमार राहुल आकोट, श्री हरदेव आर्य शिवगंज, श्री हाकम सिंह आर्य उत्तर प्रदेश, श्री राममोहन राय एडवोकेट हरियाणा, डॉ. शिवाजी राव महाराष्ट्र, श्री विद्यासागर वर्मा दिल्ली, श्री आर.एस. तोमर दिल्ली, श्री रमाकान्त सारस्वत आगरा उत्तर प्रदेश, डॉ. अनिल आर्य दिल्ली, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, आचार्य सन्तराम आर्य, श्री विद्यानिधि शास्त्री, श्री रामपाल शास्त्री, श्री रघुवीर वेदालंकार दिल्ली, श्री सुशील आर्य बाली दिल्ली, श्री संजय सत्यार्थी, श्री रामेन्द्र गुप्ता, श्री विजेन्द्र आर्य, श्री दामोदर आर्य बिहार, श्री जयनारायण आर्य एवं श्री दीनदयाल आर्य महराजपुर छतरपुर मध्य प्रदेश, श्री रावरघुनाथ सिंह नजफगढ़, श्री ऋषिपाल शास्त्री दिल्ली, श्री पवन आर्य दिल्ली, श्री रामकुमार सिंह आर्य दिल्ली, श्री मामचन्द्र रेवाड़िया दिल्ली, श्री आदित्य आर्य दिल्ली सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सर्वप्रथम दिवंगत आत्माओं के प्रति शोक व्यक्त किया गया तथा उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गई। जो गणमान्य व्यक्ति हमारे बीच नहीं रहे उनके नाम निम्न प्रकार हैं :–

शोक प्रस्ताव :– यह सदन श्रीमती राजेश्वरी देवी राव (स्वामी अग्निवेश जी के बड़े भाई जी की धर्मपत्नी), सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री प्रताप सिंह शूर जी बल्लभदास (मुम्बई), लाजवन्ती आर्या धर्मपत्नी श्री रघुवीर सिंह आर्य (शामली, उ. प्र.), मुम्बई सभा के मंत्री श्री अरुण अब्रोल की माता जी, ओमदत्त आर्य (जोधपुर, राजस्थान), स्वामी राजेश्वरानन्द जी (गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली), मुन्नी देवी (शकरपुर, दिल्ली), शिवदयाल आर्य (दयानन्द विहार, दिल्ली), के. सी. आहुजा (ए.जी.सी.आर., एनक्लेव, दिल्ली), दक्कनलाल पाहुजा (गुड़गांव), चरती लाल गोयल (पिता श्री विजय गोयल केन्द्रीय मंत्री), विद्यावती जी, (माता डॉ. सुधीर गुप्ता, पठानकोट), वेदवती (धर्मपत्नी श्री जयपाल सिंह आर्य, गाजियाबाद), राजबहादुर सिंह (पिता श्री रामचन्द्र सिंह, कबीर बस्ती), विद्यावन्ती चावला (भाभी श्री मनोहरलाल चावला, सोनीपत), धन्नोदेवी (धर्मपत्नी स्व. श्री बद्री प्रसाद आर्य, मंगोलपुरी), आर्य संन्यासी स्वामी वरुणवेश जी (मेरठ), कृष्णावती सेठी (धर्मपत्नी स्व. श्री मुंशीराम सेठी, दिल्ली), सी. पी. खन्ना (आर्य समाज कालकाजी), चन्द्रकांता आर्या (प्रधाना, आर्य समाज महावीर नगर), सोमनाथ कपूर (आर्य समाज, लाजपत नगर), कैलाश तिवारी (माता श्री कंवल तिवारी, (अशोक विहार), पदमा भाटिया (बहन श्री रमेश जी, प्रधान आर्य समाज कालकाजी), विशम्भरनाथ भाटिया (दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार), सुशीला आर्या (माता श्री राकेश आर्य, सुदर्शन पार्क), बलदेव तनेजा (भ्राता श्री मदन तनेजा, फरीदाबाद), के.एल. चोपड़ा (आर्य समाज कृष्णनगर, दिल्ली), के.पी. सिंह पूर्व ए.सी.पी. (भ्राता सुशील आर्य, मोलड़बंद, दिल्ली), सुशीला देवी, विद्याभूषण आर्य पूर्व मंत्री (बिहार), कुरबान सिंह (जोधपुर), विश्वपाल गुप्त (कुरुक्षेत्र), श्री जसराम जी (बिजनौर), अनिल माधव दवे (केन्द्रीय मंत्री) आदि के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करता है। वस्तुतः इन सब महानुभावों एवं देवियों का निधन आर्यसमाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। इस दुःख की घड़ी में हम सबकी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत जनों की आत्माओं को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करें।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने हैदराबाद आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश तेलंगाना का धन्यवाद प्रस्तुत किया जिसका तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उपस्थित सदस्यों ने स्वागत एवं समर्थन किया और सभी ने आयोजन की सफलता के लिए प्रो. विट्ठलराव आर्य की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। बैठक में निर्णय लिया गया कि गत फरवरी, 2017 में हैदराबाद में सम्पन्न हुए राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन में लिये गये निर्णयों के क्रियान्वयन हेतु आगामी नवम्बर, 2017 में देश में पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाने की माँग को लेकर देश की राजधानी दिल्ली में एक विशाल रैली का आयोजन किया जायेगा। उक्त रैली में विभिन्न प्रान्तों से हजारों आर्यजन जोश–खरोश के साथ भाग लेंगे। संसद के समक्ष आयोजित की जाने वाली इस रैली को देश के अनेक गणमान्य नेता सम्बोधित करेंगे। सार्वदेशिक सभा ने देश की सभी प्रान्तीय सभाओं, जिला सभाओं, स्थानीय आर्य समाजों, गुरुकुलों, आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा आर्य युवा संगठनों का आह्वान किया है कि वे अभी से रैली की तैयारी प्रारम्भ कर दें। जिन प्रान्तों से आर्यजन रैली में भाग लेने के लिए आना चाहते हैं उन सभी से निवेदन है कि वे सार्वदेशिक सभा के मुख्यालय में अपनी सूचना अवश्य देते रहें। शराबबन्दी रैली का प्रस्ताव सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक सभा एवं प्रान्तीय सभाओं में चल रहे विवाद निपटाने की दिशा में हुई प्रगति का विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि विभिन्न प्रान्तीय सभाओं में एकता के प्रयास जारी हैं और जब तक एकता नहीं हो जाती तब तक हम प्रयत्नशील रहेंगे।

अन्तरंग सभा की बैठक में सर्वश्री पं. माया प्रकाश त्यागी सभा कोषाध्यक्ष, सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, वैद्य इन्द्रदेव उपप्रधान, श्री प्रेमपाल शास्त्री उपप्रधान, श्री अनिल आर्य उपप्रधान, सभा के उपमंत्री श्री रामसिंह आर्य, सभा उपमंत्री श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री, सभा के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश भारती आदि के अतिरिक्त चौ. हरिसिंह सैनी पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार, स्वामी रामवेश जी, स्वामी ओमवेश जी, स्वामी विजयवेश जी, श्री अश्विनी शर्मा एडवोकेट पंजाब, श्री आर. एस. तोमर एडवोकेट प्रधान सार्वदेशिक न्याय सभा, श्री बिरजानन्द एडवोकेट, प्रो. श्योताज सिंह, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, श्री मामचन्द्र रेवाड़िया, श्री रमाकान्त सारस्वत, श्रीमती गायत्री मीणा, बहन प्रवेश आर्या तथा बहन पूनम आर्या आदि ने अपने विचार रखे।

बैठक में विशेष रूप से पधारे विश्व विख्यात संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने बड़ी मजबूती के साथ प्रस्ताव रखा कि हमें अपने विचारों को क्रियान्वित करने के लिए राज्यशक्ति को अपने हाथ में लेना चाहिए। जब तक सरकार में हमारा वर्चस्व नहीं होगा तब तक हम अपनी किसी भी बात को या माँग को मनवा नहीं सकते। इसलिए अपनी अलग पार्टी बनाकर आर्य समाज को देश की राजनीति में उतरना चाहिए। स्वामी जी ने यह भी स्पष्ट किया कि आर्य समाज स्वयं भले ही राजनीति में भाग न ले किन्तु ऐसी पार्टी जो उसके विचारों के अनुकूल हो और वैदिक विचारधारा को मजबूत करने वाली हो उस पार्टी के माध्यम से राज्यशक्ति प्राप्त करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास को राजधर्म प्रकरण के रूप में प्रस्तुत करके हमारा इस दिशा में मार्ग प्रशस्त किया हुआ है।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

धीमा ज़हर है – कोल्डड्रिंक

अधिक मात्रा में कोल्डड्रिंक पीने से मृत्यु भी हो सकती है

कोलाब्राण्ड के कोल्डड्रिंक में कैफीन डाला जाता है जो अधिक मात्रा में लेने पर बेचैनी, अनिद्रा व सिरदर्द पैदा करता है। ये बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अमरीका व यूरोप में 88ppm से कम कैफीन डालती है जबकि भारत में 111ppm तक कैफीन उपयोग करती है। जाँच करने पर कोल्डड्रिक में कई अन्य जहरीले रसायन भी पाये गये, जैसे- आर्सेनिक, कैडमियम, जिंक, सोडियम ग्लूटामेट, पोटैशियम सोरबेट, मिथाइल बेंजीन, ब्रोमिनेटेड बेजिटेबल ऑयल इत्यादि। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने कोल्डड्रिंक को 'धीमा ज़हर' घोषित किया है।

किसी भी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् अग्निदाह में देशी घी डाला जाता है जिससे पूरा शरीर जल जाता है व हड्डियाँ भी जल जाती हैं परन्तु दाँत बिल्कुल नहीं जलते। इसी तरह, यदि दाँत को मिट्टी में गाड़ दें व 20 साल के बाद निकालें तो भी दाँत बिल्कुल नहीं गलते हैं।

जिस दाँत को घी की आग नहीं जला सकती, मिट्टी नहीं गला सकती है यदि उस दाँत को किसी भी कोल्डड्रिंक में डाला जाये तो ज्यादा से ज्यादा 20 दिन में वह दाँत पूरा घुल जाता है तथा छानने पर भी दिखाई नहीं देता।

कारण-कोल्डड्रिंक में फास्फोरिक एसिड (तेजाब) नामक जहर होता है, जो मनुष्य के शरीर के सबसे कठोर अंग यानि दाँत को ही नहीं बल्कि दुनियाँ की अधिकतर वस्तुओं, यहाँ तक कि लोहे को भी पूरी तरह से खा जाता है। अब आप सोचिए कि कोल्डड्रिंक पीने पर यह शरीर के कई नाजुक अंगों के सम्पर्क में आता है तो उनका क्या हाल होता होगा। चूँकि कोल्डड्रिंक में बहुत पानी होता है इसलिए इसका असर धीमे-धीमे होता है व तत्काल दिखाई नहीं देता है।

अहमदाबाद स्थित कंज्यूमर एजूकेशन एण्ड रिसर्च सेंटर द्वारा जाँच करने पर कोल्डड्रिंक में कार्बोलिक एसिड एरिथारबिक एसिड व बेंजोइक एसिड नामक तेजाब भी पाये गये हैं। रसायन विज्ञान का कोई भी विद्यार्थी जानता है कि किसी भी एसिड की तीव्रता PH पेपर से पता की जा सकती है PH7 जितनी कम होगी, एसिड उतना तीव्र होगा। कोल्डड्रिंक की PH तीव्रता लगभग 2.4 होती है। इसी कारण कोल्डड्रिंक पीने पर गले व पेट में जलन, डकारें, दिमाग में सनसनी, चिड़चिड़ापन तथा एसिडिटी हो जाती है। ध्यान रहे कि कई फलों व सब्जियों जैसे नारंगी, नींबू, कैरी में भी एसिड होते हैं लेकिन प्राकृतिक रूप में होने से शरीर में जाकर वे क्षार में बदल जाते हैं तथा शरीर की एसिडिटी कम करने का कार्य करते हैं जबकि कोल्डड्रिंक में एसिड कृत्रिम रूप में होने के कारण खतरनाक होते हैं।

घर में संडास साफ करने में इस्तेमाल होने वाले हाइड्रोक्लोरिक एसिड की PH तीव्रता कोल्डड्रिंक के बराबर है। क्या ऐसे कोल्डड्रिंक को पीना चाहिए या .....?जरा सोचिए!!!

शरीर विज्ञान के अनुसार हर प्राणी सांस के माध्यम से हवा में विद्यमान ऑक्सीजन (प्राण वायु) लेता है तथा शरीर में उत्पन्न कार्बन डाई ऑक्साईड (Co_2) नामक जहरीली गैस बाहर निकाल देता है। हर कोल्डड्रिंक में Co_2 डाली जाती है जिससे यह लम्बे समय तक खराब न हो। कोल्डड्रिंक पीने पर शरीर इसे नाक व मुँह के माध्यम से वापस बाहर निकाल देता है। यदि कभी गलती से बाहर न निकल पाये तो मृत्यु निश्चित है।

हाल ही में सरकार ने कानून बनाया है कि गाड़ियों में सिर्फ सीसा रहित (अनलीडेड) पेट्रोल ही उपयोग किया जाए क्योंकि सीसा इंजन में जलता नहीं है व धुएँ के साथ बाहर निकलकर हवा को प्रदूषित करता है। हवा में सीसे की मात्रा 0.2ppm से अधिक होने पर लोगों द्वारा इसमें सांस लेने पर यह स्नायुतंत्र, मस्तिष्क, गुर्दो, लीवर व मांसपेशियों के लिए घातक होता है।

कोकाकोला व पेप्सीकोला दोनों अमरीका की कम्पनियाँ हैं तथा वहाँ अधिक जागरूकता के कारण बेचे जाने वाले कोल्डड्रिंक में 0.2ppm से कम सीसा डाला जाता है जबकि इन्हीं बेईमान कम्पनियों द्वारा भारत में "सब चलता है" की तर्ज पर कोल्डड्रिंक में 0.4ppm सीसा डाला जाता है।

कोलाब्राण्ड के कोल्डड्रिंक में कैफीन डाला जाता है जो अधिक मात्रा में लेने पर बेचैनी, अनिद्रा व सिरदर्द पैदा करता है। ये बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अमरीका व यूरोप में 88ppm से कम कैफीन डालती है जबकि भारत में 111ppm तक कैफीन उपयोग करती है। जाँच करने पर कोल्डड्रिक में कई अन्य जहरीले रसायन भी पाये गये, जैसे- आर्सेनिक, कैडमियम, जिंक, सोडियम ग्लूटामेट, पोटैशियम सोरबेट, मिथाइल बेंजीन, ब्रोमिनेटेड बेजिटेबल ऑयल इत्यादि। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने कोल्डड्रिंक को 'धीमा ज़हर' घोषित किया है।

गौरतलब है कि एस्परटेम से बच्चों में ब्रेनहेम्रेज (मस्तिष्कघात) होकर उनकी मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए बोतल/केन पर चेतावनी लिखी है कि बच्चे इस्तेमाल न करें।

डॉक्टर्स के अनुसार कोल्डड्रिंक में पौष्टिक तत्व बिल्कुल नहीं है। यानि इसमें शरीर के लिए आवश्यक प्रोटीन, विटामिन, वसा, खनिज, कैल्शियम व फास्फोरस में से कुछ भी नहीं है। वहीं दूसरी ओर दूध औषधीय गुणधर्म वाला पौष्टिक, सुपाच्य व सम्पूर्ण आहार है तथा सिर्फ इसको पिलाने से बच्चे के शरीर का पूर्ण विकास होता है।

कीमत - कोल्डड्रिंक - 10/- रुपये 300 मिली. बोतल 33/- रुपये लीटर (फैक्ट्री लागत 70 पैसे/बोतल) .... दूध - अधिकतम 38/- रुपये प्रति लीटर।

बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हजारों वर्षों से दूध की नदियों की संस्कृति वाले हमारे देश में पिछले 10 वर्षों में आम मानसिकता इतनी विकृत हुई है कि आधुनिकता व स्टेट्स के भ्रम में लोग दूध से दोगुना से ज्यादा मंहगा तथा कई जहरीले रसायनों वाला कोल्डड्रिंक जीवन जल समझकर गटागट पी ही नहीं रहें हैं बल्कि देवता स्वरूप अतिथि को पिला भी रहे हैं।

एक 300 मिली. कोल्डड्रिंक की बोतल धोने में लगभग 10 लीटर पानी खर्च होता है। जिस देश में आजादी के इतने वर्षों के बाद भी 2 लाख गाँवों यानि 33 करोड़ जनसंख्या यानि हर तीन में से एक व्यक्ति को पीने के लिए पानी भी नसीब नहीं होता है, उस देश में कोल्डड्रिंक पीने से बड़ा कोई और पाप नहीं है। जरा सोचिए!!!

ये दोनों कम्पनियाँ सांठगांठ करके सारी कोल्डड्रिंक की एक ही कीमत रखती है। कोल्डड्रिंक में 1000 प्रतिशत से ज्यादा मुनाफा होने के कारण बिक्री बढ़ाने के लिए ये कम्पनियाँ करोड़ों रुपये खर्च करके फिल्मी सितारों व खिलाड़ियों के विज्ञापन सभी टी. वी. चैनलों, अखबारों व पत्रिकाओं में बार-बार देती है। इनसे बड़ा खेलों व फिल्मों का प्रायोजक पूरी दुनियाँ में कोई नहीं है। ये नये-नये व लुभावने व सेक्सी विज्ञापनों द्वारा लोगों के मस्तिष्क को पंगु बनाकर पश्चिमी जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है तथा मन में कामेच्छा जगाती है।

दुर्भाग्य इस देश का कि कंगाली का रोना रोने वाली सरकार ने जहाँ एक ओर गरीबों को मिलने वाले राशन के अनाज की कीमत डेढ़ गुनी कर दी है वहीं दूसरी ओर इस जहरीले पानी पर एक्साइज ड्यूटी 8 प्रतिशत घटा दी है।

अतः बहिष्कार करें - पेप्सी, लहर, 7अप, मिरिण्डा, रश, कोक, स्प्राईट, थम्सअप, लिम्का, गोल्डस्प्राइट का।

और सेवन करें - ताजे फलों का रस, मिल्क शेक, नारियल पानी, कैरी पानी, नींबू की शिकन्जी, दूध, दही, लस्सी, जलजीरा, ठंडाई, चंदन, रुहआफज़ा, रसना, डाबर फ्रूटी, पारले फ्रूटी गोदरेज जम्पिन आदि का सेवन करें।

- श्री मनोहर लाल छावड़ा के सौजन्य से
(सुमंगलम् संस्था द्वारा जनहित में प्रकाशित)

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें
– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.
'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।
प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 23260985

योग : जीवन का विज्ञान एवं दर्शन

– वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

विज्ञान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी भी वस्तु को हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष देखा जा सकता है, उसका विश्लेषण किया जा सकता है। योग जीवन का विज्ञान है। इतना ही नहीं, अपितु योग इससे भी आगे बढ़कर है। योग तथा विज्ञान में दो बातों का अन्तर स्पष्ट हैं पहला यह कि विज्ञान के निष्कर्ष सुनिश्चित होने पर भी परिवर्तनशील है। एक समय में सुप्रतिष्ठित दूसरे समय में प्रासंगिकता खो देते हैं। योग में यह त्रुटि नहीं है योग के सिद्धान्त, इसकी मान्यताएं इसके निष्कर्ष सार्वकालिक हैं। जो सिद्धान्त तथा निष्कर्ष कल प्रासंगिक थे वे आज भी हैं तथा भविष्य में भी रहेंगे जबकि विज्ञान में ऐसा नहीं है। अतः योग को जीवन का विज्ञान कहने की अपेक्षा जीवन का गणित कहना अधिक उपयुक्त होगा। गणित के सिद्धान्त सुनिश्चित होते हैं। 2+2 सदा 4 ही रहेंगे इसी प्रकार योग के सिद्धान्त भी सदा एवं सर्वथा अपरिवर्तनीय हैं तथा रहेंगे। योग तथा विज्ञान में दूसरा भेद यह है कि विज्ञान केवल मूर्त तथा भौतिक पदार्थों का विश्लेषण करता है जबकि योग अभौतिक तथा अमूर्त पदार्थों का भी विश्लेषण करता है, उनका साक्षात्कार करता है। मन यद्यपि भौतिक किन्तु अमूर्त है। मन में रहने वाले विचार, वृत्तियाँ, संकल्प भी अमूर्त हैं। योग इन सभी का विश्लेषण करता है, जबकि विज्ञान के द्वारा यह सम्भव नहीं। यद्यपि मनोविज्ञान के द्वारा मन का अध्ययन किया जाता है, किन्तु वह बाह्य है। मन की गहराई, उसके निरोध तथा नियंत्रण में जिस सीमा तक योग जाता है आधुनिक मनोविज्ञान वहां तक नहीं जाता है।

योग जीवन का विज्ञान है, इस विषय पर कुछ कहने से पूर्व हमें यह जान लेना चाहिए कि जीवन है क्या? केवल प्राण लेने का नाम या चलते फिरते रहने का नाम जीवन नहीं है, अपितु आत्मा, मन, बुद्धि, प्राण तथा शरीर के संयोग का नाम जीवन है योग इन सभी को लेकर आगे बढ़ता है। सभी उसके विषय हैं। मन का पूर्ण शुद्धिकरण मन का विषय है। ऋतंभरा प्रज्ञा की प्राप्ति इसी मार्ग पर होती है। शारीरिक स्वास्थ्य तथा नीरोगता भी योग का लक्ष्य है। इसलिए पतंजलि ने व्याधि की गणना अंतरायों में की हैं। प्रमुख रूप में आत्मदर्शन योग का लक्ष्य है। वृत्ति निरोध के पश्चात् वह सुतरां सिद्ध है। इस प्रकार योग दर्शन सम्पूर्ण जीवन का, जीवन के पांचों भागों–आत्मा, मन, बुद्धि, प्राण तथा शरीर का विज्ञान है। इस विज्ञान की तुलना संसार का कोई भी विज्ञान नहीं कर सकता।

आज संसार भौतिक उन्नति पर टिका है और वही उसका लक्ष्य है। आज का मानव शरीर एवं इन्द्रियों की संतुष्टि में लगा है आज वह भौतिक साधनों से क्षणिक मनःतोष के साथ पर्याप्त दुख भी प्राप्त कर रहा है, तथापि वह दुख के श्रोत को सुख देने का कोई यत्न नहीं कर रहा है। कामनाओं तथा विविध इच्छाओं का जो बीज उसके मन में निहित है, वह उसे ही अंकुरित, पल्लवित एवं पुष्पित कर रहा है। इसीलिए आज संसार दुःख मग्न है। भौतिक ऐश्वर्य के होने पर भी प्राणियों को शान्ति नहीं।

अपरिमित ऐश्वर्य को प्राप्त करके ऊँचे से ऊँचे पद पर प्रतिष्ठित होकर, मान–सम्मान, धन–धान्य सभी से सम्पन्न होने पर भी वे दुखी हैं, त्रस्त हैं उद्विग्न हैं तथा अशांत हैं। आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक के रूप में तीन प्रकार के दुःख दर्शनशास्त्र में माने गये हैं। कपिल मुनि इनकी निवृत्ति के लिए 'अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्ति पुरुषार्थः' है कह रहे हैं। दुखों का यह विभाग सभी व्यक्तियों पर लागू नहीं होता। संसार में ऐसे अनेक व्यक्ति मिल जायेंगे जो आधिभौतिक तथा आधिदैविक दुखों से ग्रस्त नहीं हैं, तथापि वे दुखी हैं संतप्त हें, शोक ग्रस्त हैं ऐसे व्यक्ति स्वयं अनुभव करते हैं कि वे अंदर से रिक्त हैं। उनका समस्त ऐश्वर्य भी शान्ति नहीं दे रहा। इसी कारण उनके मन में एक बेचैनी है छटपटाहट है। इस अवस्था से छुटने की। इसी का नाम आध्यात्मिक दुख है यह दुख बाह्य साधनों से, सांसारिक ऐश्वर्य से दूर नहीं हो सकता। इससे छूटने का एक ही मार्ग है तथा इसी का नाम योग मार्ग है।

योग जीवन जीने का विज्ञान है। आनन्दपूर्वक जीने का दर्शन है। योग मार्ग के पथिक आध्यात्मिक दुख कष्ट नहीं देते। सभी व्यक्ति योग मार्ग के पथिक नहीं बन सकते, पतंजलि बात को जानते हैं। अत्यन्त तमोगुण प्रधान वृत्ति वाले तथा अत्यन्त रजोगुण प्रधान वृत्ति वाले व्यक्ति योग मार्ग के पथिक नहीं बन सकते वे तो सांसारिक भोगों में ही मस्त हैं। ऐसे लोग एक साधन में सुख न देखकर दूसरे साधन को सुखमय समझकर अपनाते हैं किन्तु वहां पर भी दुख ही प्राप्त करके पश्चाताप करते हैं व्यास जी ऐसे व्यक्तियों को

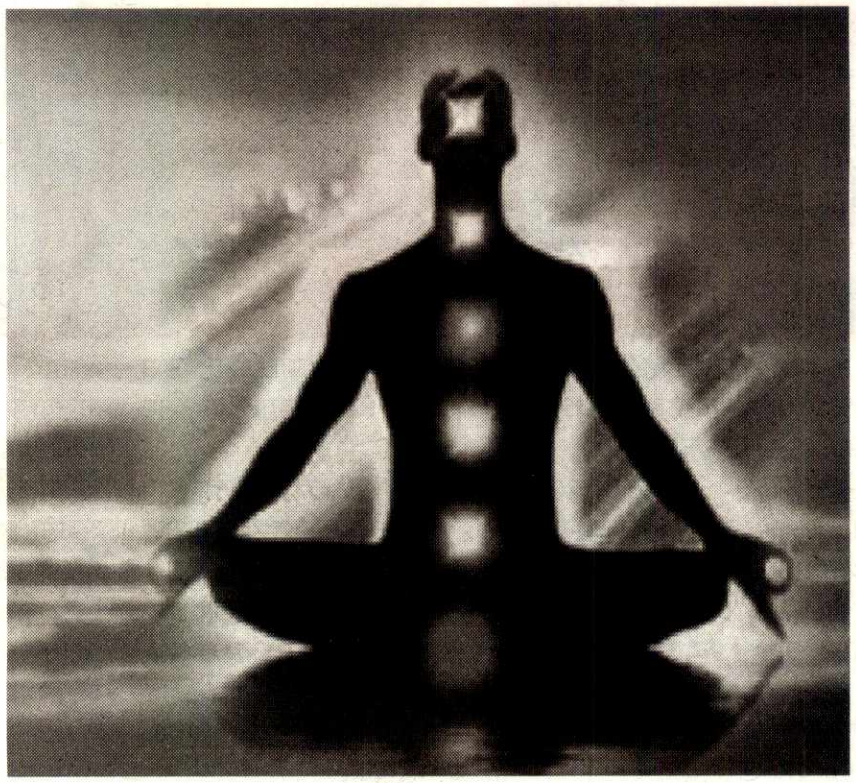

'वृश्चिकविषभीतइवाशीविषेण दष्टः' कहते हैं। अर्थात् जो बिच्छू के डंक से डर कर सर्प विष के द्वारा ग्रसित हो जाता है। इसका परिणाम बतलाते हुए व्यास जी कहते हैं – 'विषयवासनानुवासिती महति दुःख पंके निमग्नः' अर्थात् विषयों की वासना से अनुप्रणित होकर ऐसा व्यक्ति महान् दुःख सागर में निमग्न हो जाता है। रजोगुण एवं तमोगुण प्रधानवृत्ति वाले व्यक्ति ही ऐसे होते हैं। वे योग मार्ग के पथिक नहीं हो सकते।

योग मार्ग के पथिक को श्रद्धालु जिज्ञासु एवं मुमुक्षु होना ही चाहिए। उसके मन में दुःखों से छूटने की कामना होनी चाहिए, तभी वह योग मार्ग पर चलेगा। संसार में तीन प्रकार के प्राणी हैं। एक वे जो सांसारिक भोगों को ही सुखदायक मानकर इनमें ही मस्त हैं। दूसरे वे जो इनमें आसक्त तथा व्यस्त तो हैं किन्तु उनके मन में इन्हें छोड़ने की कामना है क्योंकि वे इनसे दुःखी हैं। तीसरे व्यक्ति वे हैं जो समस्त भोगों को दुःखपूर्ण मानकर इनका ग्रहण ही नहीं करते।

हस्तसालनात् पंकस्य दूराद् वर्जनं पवरम्। हाथ में कीचड़ लेकर पुनः पानी से हाथ साफ करने की अपेक्षा कीचड़ का स्पर्श न करना ही श्रेष्ठ हैं यही विवेक का मार्ग है। योगदर्शनकार यही कहते हैं कि विवेकी व्यक्ति के लिए समस्त भोग दुःखदाई ही हैं क्योंकि वे परिणाम ताप तथा संस्कार के रूप में दुःख रूपता को ही उत्पन्न करते हैं महात्मा बुद्ध ने कदाचित् इसी आशय से 'सर्व दुःखं दुःखं' कहा है। आदि शंकराचार्य भी दुःखों के प्रति व्यक्ति को सावधान करते हुए कहते हैं।

जन्म दुःख जरा दुःखं व्याधिः दुःखं पुनः–पुनः।
मरणं तु महद दुःखं तस्मांजागृहि जागृहि।।

नाना भोगों को भोगने में सुख नहीं है इसे स्पष्ट करते हुए व्यास जी कहते हैं कि भोगों को भोगने में निम्न दोष है :–

1. सभी भोग राग तथा द्वेष को उत्पन्न करते हैं।

2. वे स्थाई नहीं हैं। उनके न मिलने पर तथा नष्ट होने पर कष्ट होता है।

3. सुखोपभोग के कारण पुनः–पुनः उन भोगों को भोगने की इच्छा होती है। भोगों को भोग कर इन्द्रियों को तृष्णा रहित नहीं किया जा सकता।

4. भोगों में सुख से सुख के संस्कार तथा दुःख मिलने पर दुःख के संस्कार चित्त में संचित होते हैं। कठोपनिषद में यमाचार्य द्वारा समस्त भोगों का प्रलोभन दिये जाने पर नचिकेता भी भोगों में इसी प्रकार के दोष दिखलाता हुआ कहता है – (1) सभी भोग नश्वर हैं। (2) ये इन्द्रियों की शक्ति को नष्ट कर देते हैं। (3) भोगों को भोगने के लिए समस्त जीवन भी कम है। समस्त जीवन में भी इन्हें नहीं भोगा जा सकता। इससे क्या होगा? इसका उत्तर भर्तृहरि देते हैं कि शरीर के जीर्ण होने पर भी भोगों के प्रति हमारे मन की तृष्णा कम नहीं होगी अपितु मुद्राराक्षस के लेखक विशाखदत्त के शब्दों में तो 'तृष्णैका तरुणायते'। अर्थात् वृद्धावस्था में इन्द्रियों तथा शरीर की शक्ति शिथिल होने पर भी तरुणी की भांति तृष्णा बलवती होती जाती है। जो कि चित्त में विषाद, क्षोभ एवं पश्चाताप को ही उत्पन्न करती है। इसीलिए व्यास जी कहते हैं कि इस अनादि दुख स्रोत में अपने आपको निमग्न देखकर विवेकी पुरुष आत्मदर्शन की शरण में आता है जो कि सभी दुःखों का विनाशक है।

व्यास जी कहते हैं कि इस समस्त दुःख समुदाय का उत्पत्ति स्थान अविद्या है। योगदर्शन इस अविद्या पर ही प्रहार करता है। व्यास जी कहते हैं कि अन्य सभी क्लेशों के मूल में अविद्या ही है – सर्व एव तदा क्लेशा अविद्या भटाः। अविद्या के कारण ही व्यक्ति दुःख सागर में गोते खा रहा है। अविद्या के कारण वह उल्लासपूर्ण जीवन नहीं जी सकता तथा न ही आत्मदर्शन कर सकता जो कि उसका परम लक्ष्य हैं योग दर्शन अविद्या को समूल नष्ट करके आत्मदर्शन का सर्ग बतलाता है। इसे ही पतंजलि ने 'तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्' (यो.सू. 1/2) के द्वारा कहा है। याज्ञवल्क्य स्मृति में तो योग के द्वारा आत्मदर्शन को परम धर्म कहा गया है। निरुक्त में यास्काचार्य तो यह भी कह रहे हैं कि गर्भस्थ जीव गर्भ में नाना कष्टों तथा अपने विविध जन्म–मरणों का स्मरण करता हुआ प्रतिज्ञा करके आता है कि इस घोर कष्ट से छूट कर संसार में जाकर मैं सांख्य तथा योग का अभ्यास करूँगा।

संसार में आकर वह अपनी प्रतिज्ञा को भूल जाता है इसीलिए आजीवन कष्ट उठाता है। संसार में आकर व्यक्ति यदि योग मार्ग का आश्रय ले तो वह सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेगा। जन्म लिया है तो जीना सबकी अनिवार्यता है। सोचना यह है कि हम प्रसन्नता–उल्लास–आनन्दपूर्वक जीना चाहते हैं या दुःख में निमग्न होकर तनाव का जीवन जीना चाहते हैं? योग मार्ग ही ऐसा विज्ञान है कि जिसके द्वारा हम आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए मृत्यु के उपरान्त भी अमृतत्व को प्राप्त कर सकते हैं। योग मार्ग ही ऐसा दर्शन है कि जिसके माध्यम से हम अपने लक्ष्य को अपने स्वरूप को भलीभांति देख सकते हैं। दृश्यतेऽनेनेति दर्शनम्। विशेषेण ज्ञायतेऽनेनेति विश्वनम्। दर्शन का अर्थ है सूक्ष्म चिन्तन तथा विज्ञान का अर्थ है विशेष ज्ञान। योग के

शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य समाज नेनौरा, जिला–मंदसौर, मध्य प्रदेश के तत्वावधान में 27वाँ सामवेद पारायण यज्ञ समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष विद्वत् शिरोमणि आचार्य सोमदेव शास्त्री द्वारा अपने पैतृक भूखण्ड पर स्वयं अर्जित धनराशि से निर्मित भव्य सत्संग भवन का लोकार्पण

11 मई, 2017 से 14 मई, 2017 तक आयोजित उक्त समारोह में आर्य सामाजिक कार्यकर्ता संगोष्ठी, आर्य महिला एवं आर्य युवा संगोष्ठियों का महत्त्वपूर्ण आयोजन रहा आकर्षण का केन्द्र

वैदिक विद्वानों एवं आर्य भजनोपदेशकों द्वारा दिये गये प्रेरणास्पद वेदोपदेश

गत् 11 मई, 2017 से 14 मई, 2017 तक प्रतिवर्ष की भांति आर्य समाज नेनौरा, जिला–मंदसौर, मध्य प्रदेश द्वारा भव्य सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इस चार दिवसीय कार्यक्रम का सम्पूर्ण दायित्व विद्वत् शिरोमणि आचार्य सोमदेव शास्त्री जी के कन्धों पर टिका हुआ था। उन्होंने सम्पूर्ण कार्यक्रम स्वयं अर्जित आर्थिक संसाधनों से सम्पन्न किया। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण भव्य सत्संग भवन का लोकार्पण था जिसका निर्माण आचार्य सोमदेव जी एवं उनके परिवार ने अपने पैतृक भूखण्ड पर अपने धन से करवाया हुआ था। कार्यक्रम में आस–पास के कई गाँव से आर्य समाजों के सैकड़ों सदस्य एवं उदयपुर, भीलवाड़ा, नीमच, मंदसौर, पिपलिया मण्डी एवं देश के अन्य भागों से भी आर्यजन सम्मिलित हुए। विदित हो कि आचार्य सोमदेव जी शास्त्री द्वारा 27 वर्ष पूर्व प्रारम्भ किये गये वेद पारायण यज्ञ की दो वर्ष पूर्व रजत जयन्ती विशाल स्तर पर ग्राम नेनौरा में मनाई गई थी जिसमें देश के कोने–कोने से संन्यासी, विद्वान, भजनोपदेशक एवं आर्य समाजों के पदाधिकारी सम्मिलित हुए थे। उक्त रजत जयन्ती समारोह का आयोजन भी आचार्य सोमदेव जी शास्त्री ने निज साधनों एवं प्रयत्नों से सम्पन्न कराया था। यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि आचार्य सोमदेव शास्त्री जी आर्य जगत के एक ऐसे त्यागी, तपस्वी एवं वैदिक मिशनरी विद्वान हैं जिन्होंने संकल्प किया हुआ है कि उन्हें यज्ञों के माध्यम से जो दक्षिणा एवं धनराशि प्राप्त होगी उसे वे अपने परिवार एवं स्वयं के लिए खर्च न करके अपने पैतृक गाँव में वेद प्रचार की भावना से आयोजित होने वाले यज्ञों पर ही खर्च करेंगे या गुरुकुल शिक्षा एवं वेद प्रचार पर व्यय करेंगे। ऐसा संकल्प करने वाले आचार्य सोमदेव शास्त्री निःसंदेह एक अद्वितीय उदाहरण हैं जो अपने इस त्यागपूर्ण संकल्प के कारण पूरे आर्य जगत् के लिए पूज्य हैं।

11 मई, 2017 को प्रातः यज्ञ के उपरान्त भव्य सत्संग भवन का लोकार्पण आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के मंत्री श्री प्रकाश आर्य (महु) ने संयुक्त रूप से वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ किया। लोकार्पण की विधि प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने संस्कार विधि के अनुसार शाला प्रवेश की विधि द्वारा सम्पन्न कराई। इस अवसर पर आचार्य सोमदेव शास्त्री, युवा वैदिक विद्वान आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक होशंगाबाद, कन्या गुरुकुल सासनी की आचार्या डॉ. पवित्रा विद्यालंकार, आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द एडवोकेट, आचार्य दयासागर रायपुर, श्री जीववर्द्धन शास्त्री बांसवाड़ा, कर्नल सोहन लाल उदयपुर, श्री गोविन्द राम आर्य देपालपुर इन्दौर, भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के महामंत्री श्री कैलाश कर्मठ, विदुषी श्रीमती शुलभा शास्त्री एवं डॉ. मनीषा आर्या, प्रसिद्ध गायक श्री हेमन्त आर्य, श्री दीनानाथ शर्मा छोटी सादड़ी, श्री शंकर सिंह भीलवाड़ा, श्री जगदीश प्रसाद आर्य नीमच आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। आर्य समाज नेनौरा के पदाधिकारियों ने समस्त संन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों एवं आगन्तुक अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। तत्पश्चात् आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं की महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। संगोष्ठी में उपस्थित सैकड़ों प्रमुख कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये। संगोष्ठी में कार्यकर्ताओं द्वारा दिये गये सुझावों में मुख्य बिन्दु निम्न प्रकार थे :–

1. सार्वदेशिक स्तर पर संगठन मजबूत एवं एक होना चाहिए।
2. आर्यों की कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए।
3. नीचे से ऊपर तक संगठन में युवाओं को दायित्व सौंपे जाने चाहिए।
4. जनभावनाओं को छूने वाले मुद्दों को लेकर आर्य समाज बढ़–चढ़कर कार्य करे तथा आम आदमी को प्रभावित करे।
5. वैदिक साहित्य सुन्दर एवं सस्ता उपलब्ध कराया जाये।
6. बच्चों के चरित्र निर्माण शिविर आयोजित किये जायें।
7. आर्यजन अपने बच्चों को एवं परिवार के सदस्यों को पहले आर्य बनायें।
8. वैदिक परिवारों का

अगले पृष्ठ पर जारी

पिछले पृष्ठ का शेष

आर्य समाज नेनौरा, जिला–मंदसौर, मध्य प्रदेश के तत्वावधान में 27वाँ सामवेद पारायण यज्ञ समारोह पूर्वक सम्पन्न

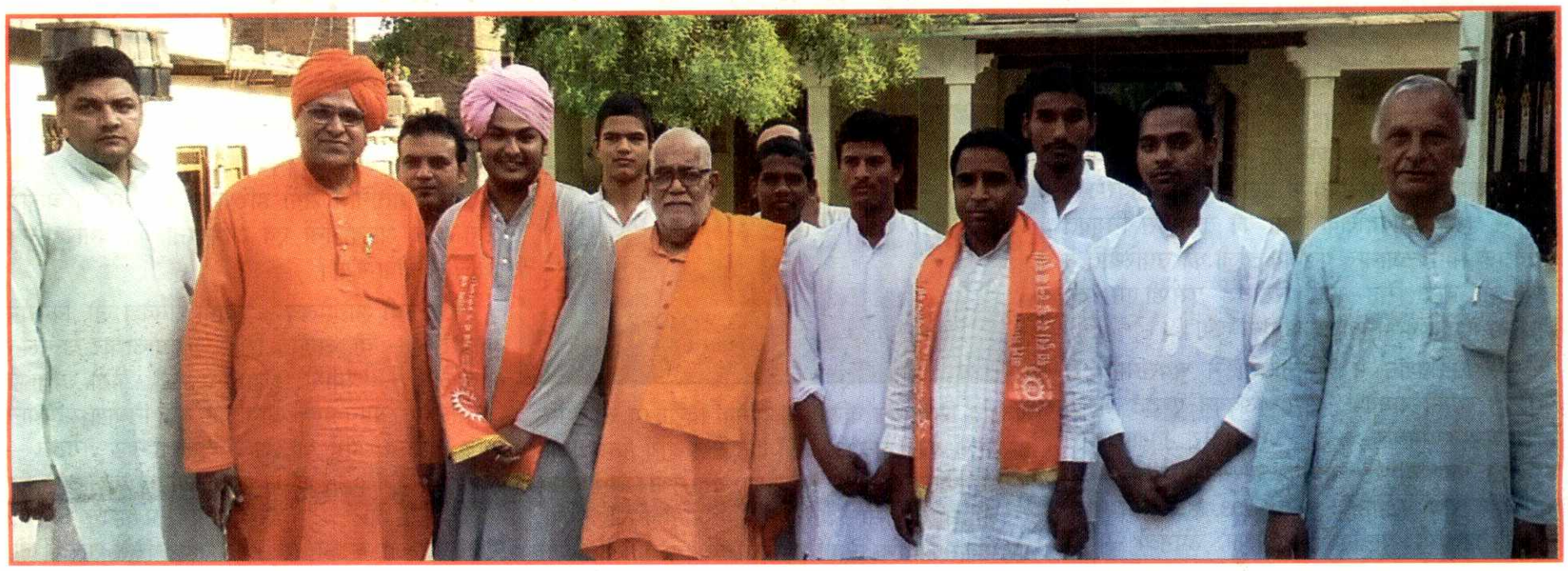

निर्माण किया जाये तथा वैदिक परिवार निर्माण एवं सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जायें।

इस प्रकार अनेक महत्त्वपूर्ण सुझावों पर चिन्तन–मनन किया गया। आचार्य सोमदेव शास्त्री जी के संयोजन तथा आर्य समाज नेनौरा के तत्वावधान में आयोजित 27वें सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति 14 मई, (रविवार) को नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, पाखण्ड एवं अश्लीलता आदि के विरुद्ध संकल्प के साथ सम्पन्न हुई। सैकड़ों पुरुषों एवं महिलाओं ने यज्ञ में आहुति देकर उक्त संकल्प लिये। इस चार दिवसीय समारोह में मुख्य रूप से प्रसिद्ध वैदिक विद्वान विश्व विख्यात आचार्य पं. वेद प्रकाश श्रोत्रिय, सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, अनेक गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, प्रखर ओजस्वी वक्ता युवा विद्वान् आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, डॉ. पवित्रा वेदालंकार, श्री कैलाश कर्मठ, श्री नरेश दत्त आर्य, श्री भीष्म दत्त आर्य, आचार्य दयासागर, श्री जीववर्द्धन शास्त्री एवं ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य आदि विद्वानों एवं भजनोपदेशकों ने प्रभावशाली प्रवचन एवं वेदोपदेश द्वारा श्रोताओं को लाभान्वित किया। प्रातः एवं सायं सामवेद पारायण यज्ञ निरन्तर चलता रहा। जिसमें कई याज्ञिक परिवारों ने यज्ञमान बनकर अपना योगदान दिया। सम्पूर्ण कार्यक्रम की सफलता में आर्य समाज के मंत्री मा. रामेश्वर आर्य, कुण्डी लाल पाटीदार, दशरथ आर्य, राजेन्द्र आर्य, मुकेश पाटीदार, शिवनारायण नागर, चन्द्रपाल आर्य, बाबूलाल पाटीदार आदि की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

आचार्य सोमदेव शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री एवं उनके कनिष्ठ पुत्र श्री अनिरुद्ध आर्य ने आगन्तुक उपदेशकों एवं विद्वानों के आतिथ्य में कोई कसर नहीं छोड़ी। यज्ञ में वेद पाठ का दायित्व श्रीमती शुलभा शास्त्री एवं कुमारी मनीषा आर्या ने बड़ी कुशलता के साथ निभाया। ब्रह्मा पद को युवा विद्वान् आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने सुशोभित किया।

समारोह में सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य जगत का

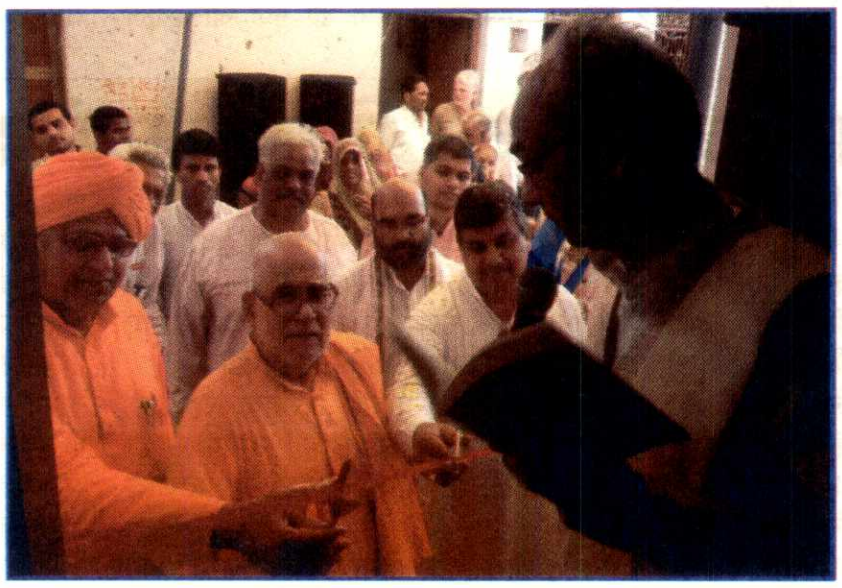

आह्वान किया कि प्रत्येक स्थानीय आर्य समाज में ग्राम नेनौरा में आयोजित कार्यक्रम के अनुरूप आर्यजन वेद प्रचार की योजना बना सकें तो देश–विदेश में आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के विचारों की दुन्दुभी बजाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता, पदाधिकारी एवं उपदेशक वर्ग आचार्य सोमदेव जी शास्त्री के जीवन तथा मिशनरी भावना से प्रेरणा लेकर कार्य करें। वर्तमान में देश की ज्वलन्त समस्याओं के समाधान के लिए आर्य समाज को तेजस्वी तथा सक्रिय बनाने की महती आवश्यकता है।

इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने वैदिक संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा की सुरक्षा अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध है। यदि संस्कृत को महत्त्व नहीं मिला तो वैदिक संस्कृति भी महत्त्वहीन हो जायेगी। अतः गुरुकुलों को सक्षम एवं सम्पन्न बनाकर हम संस्कृत के विद्वान तैयार करें ताकि वैदिक सिद्धान्तों को पूरे विश्व में प्रचारित तथा प्रसारित किया जा सके।

आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने समस्त विद्वानों एवं ग्रामवासियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए घोषित किया कि नेनौरा में वेद पारायण यज्ञ की परम्परा निरन्तर चलती रहेगी और वे प्रतिवर्ष इसी प्रकार आर्यों का मेला आयोजित करते रहेंगे। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि ईश्वर की असीम कृपा मेरे ऊपर है कि सर्वात्मना समर्पित होकर आर्य समाज का कार्य करने में मुझे मेरे सभी भाई–बहनों, मेरी पत्नी व मेरे पुत्रों, पुत्र वधुओं एवं सभी परिवारजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है। वहीं गांव के सभी प्रतिष्ठित महानुभावों का योगदान भी मुझे विशेष शक्ति प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, स्वामी आर्यवेश जी, श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय, प्रभृति विद्वान हमारे इस छोटे से गांव में अपना अमूल्य समय देकर समस्त असुविधाओं की परवाह किये बिना कार्यक्रम में आते हैं यह उनकी ग्रामवासियों व क्षेत्रवासियों पर विशेष कृपा है।

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में सत्संग की अद्भुत व्याख्या करके श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने आचार्य सोमदेव जी को आर्य समाज का एक प्रकाशपुंज बताते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य की कामना की।

आर्य समाज भीलवाड़ा के प्रधान श्री विजय शर्मा ने सपत्नीक यज्ञ में सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा सभी विद्वानों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में श्री भूपेश आर्य, श्री धर्मेन्द्र पहलवान एवं गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियों ने भी मनोयोग से सहयोग प्रदान किया। पूर्णाहुति के अवसर पर भव्य ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 1500 लोगों ने स्वादिष्ट भोजन का आनन्द उठाया।

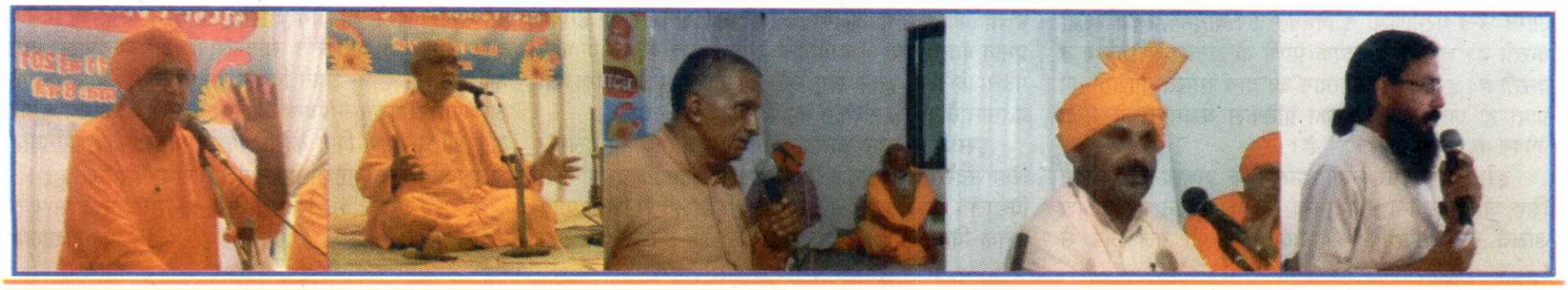

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा (पंजीकृत) का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न

सर्वसम्मति से स्वामी रामवेश जी प्रधान, श्री राममोहन राय एडवोकेट मंत्री तथा प्रिं. आजाद सिंह कोषाध्यक्ष निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा (पंजीकृत) का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन 20 मई, 2017 को आर्य समाज काठमण्डी सोनीपत में उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक सभा की तरफ से नियुक्त पर्यवेक्षक श्री बिरजानन्द एडवोकेट जी की उपस्थिति में तथा श्री इन्द्र सिंह आर्य रिटायर्ड एस.डी.एम. की देखरेख में विधिवत निर्वाचन सम्पन्न हुआ।

इस अधिवेशन में प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से प्रधान : स्वामी रामवेश , 3705 अरबन एस्टेट जीन्द, हरियाणा, उपप्रधान– डॉ. प्रकाशवीर विद्यालंकार, 51/29, चाणक्यपुरी, रोहतक, हरियाणा, मंत्री – श्री राममोहन राय एडवोकेट, मं.नं.–203, हाऊसिंग बोर्ड, पुरानी कालोनी, पानीपत, हरियाणा, उपमंत्री – श्री जगदीश आर्य, मं. नं.–566, सै.–37, फरीदाबाद, हरियाणा, मो.:–09313992027, कोषाध्यक्ष – प्रिं. आजाद सिंह, दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सोनीपत, हरियाणा, पुस्तकाध्यक्ष – श्री बाबूलाल आर्य, ग्राम व पो. –जूई, जिला–भिवानी, हरियाणा, वेद प्रचार अधिष्ठाता – श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री, आर्य समाज जैकमपुरा, गुड़गांव, हरियाणा निर्वाचित किये गये। इनके अतिरिक्त अन्तरंग सदस्य, सार्वदेशिक सभा को भेजे जाने वाले प्रतिनिधि तथा विशेष आमंत्रित सदस्यों का भी चुनाव किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से चलाये जाने वाले आन्दोलनों एवं अभियानों का प्रभार निम्न प्रकार से सौंपा गया।

नशाबन्दी आन्दोलन – स्वामी रामवेश जी, किसान आन्दोलन – चौ. अजीत सिंह जी, भ्रष्टाचार उन्मूलन आन्दोलन – स्वामी श्रद्धानन्द जी, बेटी बचाओ आन्दोलन – बहन प्रवेश आर्या जी, युवा निर्माण अभियान – ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी, आर्य समाजों का संगठन – स्वामी विजयवेश जी, छात्रा एवं अध्यापक प्रकोष्ठ – प्रिं. आजाद सिंह जी, लेखन एवं प्रकाशन – डॉ. प्रकाशवीर जी, वेद प्रचार – श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री जी, समन्वय – श्री राममोहन राय एडवोकेट जी।

पृष्ठ–3 का शेष

योग : जीवन का विज्ञान एवं दर्शन

द्वारा ही हम अपने शरीर, मन, आत्मा आदि के विषय में सूक्ष्म चिन्तन कर सकते हैं। इनके विषय में विशेष ज्ञान तथा शक्तियाँ प्राप्त कर सकते हैं तथा अपने स्वरूप को पहचान सकते हैं। केवल जीवन के लिए ही नही अपितु सभी कार्यों के लिए दर्शन तथा विज्ञान अपेक्षित है। यथा भोजन का विषय ही लें। हमें यह सूक्ष्मचिन्तन एवं विश्लेषण करके ही खाना चाहिए कि शरीर एवं मन के लिए कौन सा पदार्थ लाभप्रद है तथा कौन सा हानिप्रद है। यदि इसके विपरीत करेंगे तो रोगी होंगे। यह भोजन का विज्ञान है। जीवन का दर्शन तथा विज्ञान यही है कि व्यक्ति को पता रहे कि उसे जीवन किस प्रकार से व्यतीत करना चाहिए। उनका लक्ष्य क्या है तथा उसकी प्राप्ति कैसे हो सकती है? योग के द्वारा हमें इन प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं। अतः यह कहना समीचीन ही है कि योग जीवन का दर्शन तथा विज्ञान है।

योग द्वारा नियंत्रित जीवन का विज्ञान एवं दर्शन यह है कि –

1. योगी सर्वदा प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रहेगा। इस चित्त प्रसादन के लिए पतंजलि में मैत्री, करुणा, मुदिता तथा उपेक्षा आदि का भी विधान किया है। इन्हें अपनाकर योगी सदा प्रसन्न रहेगा। हम ऐसा नहीं करते। हम तो मैत्री के स्थान पर द्वेष से पूर्ण रहते हैं। कारुणिक होने के स्थान पर ऐसे पाषाण हृदय बन जाते हैं कि किसी का दुःख देखने पर भी हमारा हृदय नहीं पिघलता। दूसरे की उन्नति देखकर प्रसन्न होने के स्थान पर दुःखी होते हैं उससे ईर्ष्या करते हैं। इसीलिए दुखी होते हैं। योगी की यह स्थिति नहीं होगी।

2. भोगाकांक्षी व्यक्ति सर्वदा असंतुष्ट रहते हैं, जबकि योगी सर्वदा संतुष्ट रहता है। संतोष से ही अकल्पनीय सुख की प्राप्ति होती है, ऐसा पतंजलि कहते हैं।

3. योग तृष्णा रहित रहेगा जबकि संसार को ऐषणात्रय ने जकड़ा हुआ है। यहां पर व्यास जी महाभारत के एक श्लोक द्वारा प्रतिपादित करते हैं कि संसार के दिव्य सुख भी तृष्णाक्षय रूपी सुख के सोलहवें भाग के भी बराबर नहीं है। इसी बात को अन्यत्र इस प्रकार कहा गया है –

सन्तोषामृततृप्तानां यतसुखं शान्तचेतसाम्।
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्।।

4. योगी सर्वदा निश्चित रहेगा। ईश्वर प्रणिधान इसी निश्चिन्तता का नाम है जहाँ व्यक्ति अपना सब कुछ ईश्वर के ऊपर छोड़कर निश्चिंत जीवन व मृत्यु के प्रति सर्वथा निश्चिंत हो जाता है।

5. योगी शोक रहित रहेगा क्योंकि राग–द्वेष हर्ष तथा शोक को जन्म देने वाले हैं। योगी राग–द्वेष से छूटकर आत्म दर्शन की ओर प्रयाण करता है। इसलिए शोक से सर्वथा छूट जाता है। इसी बात को उपनिषद् 'तरतिशोकमात्मवित्' के द्वारा कह रही है। योग न केवल जीने की ही कला सिखाता है अपितु मरने की कला भी सिखलाता है। योगी व्यक्ति को अभिनिवेश नामक क्लेश नहीं होता क्योंकि वह आत्मा तथा शरीर के स्वरूप को पृथक–पृथक जान चुका होता है। वह स्वेच्छा प्राणोत्म करता है। इसे ही कालीदास 'योगेनान्ते तनूत्यजाम्' के रूप में कह रहे हैं। मृत्यु तो सबकी होगी। कोई भी उससे नहीं बच सकता। अन्तर केवल यही है कि सांसारिक व्यक्ति पूरे जीवन में तो कष्ट पाते ही हैं मृत्युकाल में भी वे अनिच्छापूर्वक बड़े कष्ट से प्राण त्यागते हैं। जीवन भर मृत्यु का भय उनके ऊपर सवार रहता है। जबकि योगी इस भय से सवर्था मुक्त रहता है। मृत्यु उसे अचानक आकर नहीं दबाती अपितु वह मृत्यु की तैयारी करता है। मृत्यु उसका क्या करेगी जबकि वह इसी जन्म में जीवनमुक्त अवस्था को प्राप्त कर लेता है अतः उसके लिए मृत्यु केवल वस्त्र बदलने के समान हैं मृत्यु के पश्चात् भी उसका गन्तव्य सुस्पष्ट है तथा वह है कैवल्य अथवा मोक्ष। इसी को वेद मंत्र 'मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्' के द्वारा कह रहा है।

– पूर्व रीडर, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

वीतराग साधु श्री सर्वदानन्द जी की पुण्यतिथि संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम अलीगढ़ में मनाई गई

वीतराग साधु श्री सर्वदानन्द जी की पुण्यतिथि संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम अलीगढ़ में मनाई गई। इस अवसर पर सर्वप्रथम यज्ञ का आयोजन स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में किया गया। स्वामी जी ने ब्रह्मा पद से उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि यज्ञ एक श्रेष्ठतम दान, संगतिकरण और देवपूजा की विधि है। क्योंकि यज्ञ का अधिष्ठाता यजमान अपनी शुभ आमदनी से जो सकल पदार्थ यज्ञाग्नि में आहुत करता है अग्नि उन्हें परमाणुओं में विभक्त कर वायुमण्डल को शुद्ध करती है। शुद्ध वायु प्रत्येक प्राणी के अन्तःकरण को शुद्ध करती है। इस प्रकार यजमान का दान समस्त प्राणियों को प्राप्त हो जाता है। जिसका प्रतिफल यजमान को सुखी जीवन के रूप में प्राप्त होता है।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जीवन सिंह जी ने स्वामी सर्वदानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्री सर्वदानन्द जी मूल रूप से हरियाणा के निवासी थे परन्तु पारिवारिक परिस्थितिवश वह पौराणिक साधु समाज से जुड़ गये थे। कालान्तर में उन्हें महर्षि दयानन्द द्वारा रचित ऐतिहासिक पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ और ईश्वर के सच्चे रूप व गुणों का उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया। स्वामी जी के अन्तःकरण में प्रकाश पुंज प्रज्ज्वलित हो गया और उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार एक बट वृक्ष के नीचे आसन लगा लिया और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को पांच पिछड़े वर्ग के बच्चों को पढ़ाना आरम्भ कर दिया। शनैः–शनैः उनका प्रभाव बढ़ता गया और विभिन्न वर्गों के बच्चे भी उनके पास पढ़ने के लिए आने लगे और विद्यालय बढ़ता गया जो वर्तमान में प्रसिद्ध संस्कृत महाविद्यालय बन गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री दलबीर सिंह सदस्य उत्तर प्रदेश विधानसभा ने कहा कि वह भी इस विद्यालय के छात्र रह चुके हैं। इस विद्यालय से शिक्षा प्राप्त अनेक विद्वान् देश–विदेश में सेवा दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि श्री आदित्यनाथ योगी मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश भी मानव उत्थान में आर्य समाज के योगदान की प्रशंसा करते हैं और इस विद्यालय की प्रतिष्ठा से भी वह परिचित हैं। इस अवसर पर श्री राजेन्द्र शर्मा प्रधान जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा अलीगढ़, श्री अभय कुमार सिंह मंत्री गुरुकुल प्रबन्ध कारिणी सभा, श्री नारायण सिंह, प्रबन्धक विद्यालय, श्री पीताम्बर शास्त्री, श्री चन्द्रपाल आर्य, श्री भूपेन्द्र सिंह, श्री शिवकुमार शर्मा अध्यापक, श्री टीकम सिंह अध्यापक, श्री रामपाल सिंह, श्री रामखिलाड़ी, श्री योगेन्द्र सिंह, श्री पूरन चन्द्र, श्री दिनेश चन्द्र सारस्वत प्रतिष्ठित समाजसेवी, श्री चन्द्रपाल आर्य आदि ने भी अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के आयोजन में गुरुकुल प्रबन्ध कारिणी के मंत्री श्री अभय कुमार और श्री नारायण सिंह का विशेष योगदान रहा। शांतिपाठ और स्वादिष्ट सामूहिक भोजनोपरान्त सभा विसर्जित हुई।

– डॉ. जीवन सिंह प्राचार्य श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय

महात्मा हंसराज जयंती समर्पण दिवस के रूप में मनाई, हवन-यज्ञ के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न

वैशाली नगर जयपुर में 22 अप्रैल, 2017 को महात्मा हंसराज जयंती को समर्पण दिवस के रूप में आयोजित करने का उद्देश्य उन मूल्यों के प्रति स्वयं को पुनः समर्पित करना है जो उस त्यागी महापुरुष ने डी.ए.वी. आन्दोलन के स्थापना काल में अपनाए।

आर्य समाज एवं डी.ए.वी. आन्दोलन देश में स्वस्थ सामाजिक विकास के लिए प्रतिबद्ध है। आर्य समाज ने जहां समाज की बुराईयों के खिलाफ समाज में नवचेतना का सूत्रपात किया, वहीं डी.ए.वी. आन्दोलन ने संस्थानों के माध्यम से लाखों घरों को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित किया। यह बात हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने वैशाली नगर के डी.ए.वी. सेंटेनरी स्कूल में महात्मा हंसराज जयंती पर आयोजित समर्पण दिवस पर कही।

कार्यक्रम का शुभारंभ हवन-यज्ञ के साथ किया गया, जिसमें राज्यपाल सहित अन्य अतिथियों ने आहुतियां देकर विश्व शांति की कामना की। रंग-बिरंगी रोशनी के बीच कार्यक्रम शुरू हुआ तो आडियंस ने अपने स्थान पर खड़े होकर अतिथियों का स्वागत किया। शुरुआत "कोई हंस राज तुझसा न होगा दूसरा" गीत से हुई इसके बाद दिल्ली एन.सी.आर. शिक्षिकाओं की ओर से नृत्य की प्रस्तुति दी गई और पुष्प वर्षा के साथ पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी का स्वागत किया गया। इस दौरान डी.ए.वी. प्रबन्धकर्ती समिति के प्रधान सूरी जी ने कहा कि महात्मा हंसराज पावन जयन्ती को समर्पण दिवस के रूप में आयोजित करने का उद्देश्य उन मूल्यों के प्रति स्वयं को पुनः समर्पित करना है जो उस त्यागी महापुरुष ने डी.ए.वी. आन्दोलन के स्थापना काल में अपनाए। इस दौरान पूर्व राज्यपाल टी.एन. चतुर्वेदी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के वी.सी.बी. के पूनिया, संत चैतन्य मुनि सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। जयपुर, कोटा के डी.ए.वी. स्टुडेंट्स की ओर से महात्मा हंसराज के जीवन पर आधारित नृत्य नाटिका का मंचन किया गया जिसमें 800 से ज्यादा स्टूडेंट्स ने पार्टिसिपेट किया और महात्मा हंसराज जी के जीवन चरित्र को साकार किया। नाटिका में बताया गया कि कैसे दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर सामान्य मनुष्य महात्मा बनता है।

समर्पण दिवस पर 6 वैदिक विद्वानों एवं 6 आर्य संन्यासियों को सम्मानित किया गया। इस दौरान सामाजिक क्षेत्र में योगदान के लिए पूर्व राज्यपाल टी.एन. चतुर्वेदी जी को आजीवन उपलब्धि, राज्यपाल आचार्य देवव्रत को शैक्षणिक क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए विशिष्ट सम्मान, महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी के वी.सी., बी. के. पूनिया को शिक्षा के क्षेत्र में डी.ए.वी. अमृतसर के प्रिंसिपल अजय बेरी, सहायक क्षेत्रीय निदेशक प्रशान्त कुमार, महाराजा गंगा सिंह एग्रीकल्चर कॉलेजियट स्कूल जम्मू प्रिंसिपल रवीन पूरी को महात्मा हंसराज सम्मान से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम को लेकर स्टाफ और बच्चों में उत्साह था। व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी स्टाफ और बच्चों ने मिलकर संभाली। एंट्रीगेट पर बच्चों ने तिलक लगाकर अतिथियों का स्वागत किया।

— पं. ईश्वर दयाल माथुर

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सम्मान समारोह एवं युवा संकल्प कार्यक्रम

दिनांक 12 जून, 2017
(सोमवार), प्रातः 9 बजे से
स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) टिटौली, रोहतक (हरि.)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति विरक्त सम्मान

स्वामी ओमवेश जी (पूर्व गन्ना मंत्री, उत्तर प्रदेश)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति विद्वत् सम्मान

डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), डॉ. रघुवीर वेदालंकार (दिल्ली), श्री रामस्वरूप रक्षक (अजमेर)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति भजनोपदेशक सम्मान

डॉ. कैलाश कर्मठ (कोलकाता)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति आर्य युवा सम्मान

श्री जितेन्द्र आर्य (शिवगंज, राज.), डॉ. पवन आर्य (जाजवान, जीन्द), श्री देवेन्द्र सैनी (हिसार), श्री सत्यवीर आर्य (कैथल)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति आर्य वीरांगना सम्मान

रिंकू आर्या (झज्जर), श्रीमती गुलाब कौर (गोहाना), मनीषा भारती (रोहतक), सुनीता देवी (सोनीपत)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सक्रिय आर्य कार्यकर्ता सम्मान

श्री वेद प्रकाश आर्य (रोहतक), श्री रामचन्द्र ठेकेदार (टिटौली), श्री राममोहन राय एडवोकेट (पानीपत), श्री लाजपत राय चौधरी (करनाल), पं. रमेश कौशिक (झज्जर), डॉ. बलवीर आर्य (जुलाना), श्री धर्मप्रकाश दहिया (सोनीपत), श्री के. सी. बब्बर (हांसी), श्री राम अवतार आर्य (फरटीया), मा. महेन्द्र आर्य (जूई, भिवानी), श्री सुरेन्द्र पहलवान (कैथल), डॉ. होशियार सिंह (राजौन्द), श्री मनीष आर्य (जीन्द), श्री धर्मेन्द्र पहलवान (छपरौली), श्री जगदीश सींवर (सिरसा), श्री देवेन्द्र आर्य (फरमाणा), श्री रामनिवास गाँधी, श्री प्रवीण आर्य (राठधना सोनीपत), श्री गुलाब सिंह आर्य (फुगाना), श्री श्रीपाल आर्य (खेड़ी पट्टी शामली)

आयोजक

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) टिटौली, रोहतक (हरि.)

आर्य समाज बहेड़ी का 73वाँ भव्य वार्षिक महोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया

जीवित माता-पिता की सेवा ही सच्चा श्राद्ध है और उनको तृप्त करना तर्पण है। मिथिला स्नातकोत्तर संस्कृत शोध संस्थान के निदेशक डॉ. देव नारायण यादव ने प्रखंड के भच्छी गांव में शुक्रवार को आर्य समाज के 73वें वार्षिक महोत्सव में उद्घाटन संबोधन के क्रम में उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि कुछ समाज विरोधी तत्व समाज को बांट कर राजनीति करना चाहते हैं। वेद सबको समान भाव, समानता की बात करता है। बेटे और बेटियों को समान रूप से शिक्षा और संस्कारवान बनाने की बात वेद करते हैं। चारो वेद ज्ञान की अक्षय निधि है।

प्रवचन के क्रम में आचार्य सुशील जी ने कहा कि मनुष्य को सौंदर्यीकरण, दान व सेवा इन तीन मूल मंत्रों का पालन करना चाहिए। अर्थात् पहले अपने शरीर का ख्याल करना चाहिए फिर धन और शिक्षा वगैरह का यथोचित दान करना चाहिए। इसके साथ ही जीवित माता-पिता की खूब सेवा करनी चाहिए।

महोत्सव के अध्यक्ष राम बुझावन यादव 'रमाकर' ने अपने भाषण में कहा कि वेद का ज्ञान सामाजिक सद्भाव एवं पर्यावरण संरक्षण व संवर्द्धन के लिए आवश्यक है। लेकिन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस दौर में वेद के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए इसकी प्रासंगिकता को आधुनिक संसाधनों के द्वारा प्रसारित कर चिन्तन-मनन करना नितान्त आवश्यक है।

आर्य समाज के 73वें वार्षिक महोत्सव में मुख्य अतिथि प्रखंड प्रमुख आरती कुमारी, पार्षद गीता देवी, शिव किशोर राव के अलावा कृष्ण चेतना मंच के उमेश राव, रमा विलास यादव, प्रो. डॉ. रूद्र कांत अमर, नीतीश कुमार सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

आर्य समाज खलासी लाईन का 63वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

स्त्री का अधिकार पुरुषों के बराबर नहीं बल्कि पुरुषों से बड़ा है

आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर के प्रांगण में 63वें वार्षिकोत्सव के समापन सत्र महिला सम्मेलन में सम्मान, सृजन और शक्ति का प्रतीक नारी का वेद में स्थान विषय पर विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये। बिजनौर से पधारे वैदिक भजनोपदेशक आचार्य भीष्म जी ने भजनों के माध्यम से कहा तू ही लक्ष्मी, तू ही सरस्वती, तू ही दुर्गा भवानी, जग ने जानी तेरी अमर कहानी।

तत्पश्चात् रमाला से पधारे वैदिक विद्वान आचार्य धीरज सिंह जी ने कहा गृहणी से रहित घर तो जंगल के समान होता है स्त्री का अधिकार पुरुषों के बराबर नहीं पुरुषों से बड़ा है वेदों से दूर होने के कारण ही स्त्रियों से पक्षपात हुआ है और स्त्रियों को सुनियोजित ढंग से अधिकार विहीन किया गया है कमजोर किया गया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती सीमा जी ने की। मंच संचालन मीना वर्मा जी ने किया। तत्पश्चात् आए हुए सभी विद्वानों, संन्यासियों, अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए डॉ. पूर्णचन्द्र जी ने कहा कि भविष्य में भी इसी प्रकार अपना अमूल्य सहयोग हमें देते रहेंगे। तत्पश्चात् शांतिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ओम प्रकाश आर्य, रेखा मारवाह, डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री, अनिता आर्य, प्रेम सागर, राजेन्द्र कुमार, सेवाराम, राजकुमार आर्य, योगराज शर्मा, सुरेन्द्र चौहान, रविकांत राणा, सुरेश सेठी, शांति देवी, शोभा आर्या, रोशनलाल, देवेन्द्र आर्य, रमा आर्या, अनिल मारवाह, राम किशोर सैनी, विजय कुमार गुप्ता, मूलचन्द यादव, सविता आर्या, अनिता आर्या, सुमन गुप्ता, आशारानी, धर्मपाल, सुधीर कुमार, प्रकाशचन्द्र वशिष्ठ, सुरेन्द्र यादव, डॉ. राजवीर सिंह वर्मा, अवनीश आर्य, मधु आर्या, दधीचि जी, रघुवीर कौर, प्रेम मुनि, आनन्द मुनि जी, किशनलाल शर्मा, विनोद शर्मा आदि उपस्थित रहे।

— रविकान्त राणा, मंत्री,
आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर, उ. प्र.

8 POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 26–27 मई, 2017
प्रकाशन की तिथि : 25 मई, 2017
वैदिक सार्वदेशिक
25 से 31 मई, 2017
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

प्रभु हमारे भीतर वैदिक सत्य को जाग्रत् कर दें

**अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति।।**

—ऋ० १/१/४

ऋषिः—मधुच्छन्दाः।। देवता—अग्निः।। छन्दः—गायत्री।।

विनय—हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारम्भ करते हैं और चाहते हैं कि यज्ञ सफल हो जाएँ, परन्तु हे देवों अग्निदेव! कोई भी यज्ञ तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूँकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्य शक्तियों के अर्थात् देवों के द्वारा ही सबकुछ सम्पन्न होता है। तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है? और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वर अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो अवश्य होना चाहिए, पर जब हम यज्ञ प्रारम्भ करते हैं, कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संघ–संघठन में लगते हैं, परोपकार का कार्य करने लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिए हिंसा और कुटिलता से भी काम लेने को उतारू हो जाते हैं। तभी तुम्हारा हाथ हमारे ऊपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों को स्वीकृत नहीं होता, उन्हें नहीं पहुँचता— सफल नहीं होता। हे प्रभो! अब जब कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगें और तुझे भूल जाएँ तो हे प्रकाशक देव! हमारे अन्तरात्मा में एक बार इस वैदिक सत्य को जगा देना; हमारा अन्तरात्मा बोल उठे कि "हे अग्ने! जिस कुटिलता व हिंसा–रहित यज्ञ को तुम सब ओर से घेर लेते हो, व्याप लेते हो, केवल यही यज्ञ देवों में पहुँचता है, अर्थात् दिव्य फल लाता है—सफल होता है।' सचमुच तुम्हें भुलाकर, तुम्हें हटाकर यदि किसी संगठन–शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के ज़ोर पर कुछ करना चाहेंगे तो चाहे कितना घोर उद्योग करें पर हमें कभी सफलता न मिलेगी।

शब्दार्थ—**अग्ने**=हे परमात्मन्! **त्वम्**=तुम **यम्**=जिस **अध्वरं यज्ञम्**=कुटिलता तथा हिंसा से रहित यज्ञ को **विश्वतः परि भूः असि**=सब और से व्याप लेते हो **स इत्**=केवल वही यज्ञ **देवेषु गच्छति**=दिव्य फल लाता है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रसिद्ध उद्योगपति, दानवीर, समाजसेवी, शिक्षाविद तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान

श्री प्रताप सिंह शूर जी बल्लभदास का देहावसान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान प्रसिद्ध दानवीर, समाजसेवी तथा शिक्षाविद श्री प्रताप सिंह शूर जी बल्लभदास का 6 मई, 2017 को मुम्बई में देहावसान हो गया। वे लगभग 100 वर्ष के थे।

श्री प्रताप सिंह शूर जी बल्लभदास आर्य समाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्ष 1963 से 1970 तक प्रधान रहे। उनके नेतृत्व में आर्य समाज ने देश–विदेश में अपने कार्यों से विशेष उपलब्धियाँ प्राप्त की थी। मारीशस में आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आपने कुशल नेतृत्व किया था तथा आज भी उस सम्मेलन की स्मृतियाँ लोगों के जहन में विद्यमान है। श्री शूर जी बल्लभदास जी का नाम प्रसिद्ध समाजसेवियों की सूची में अग्रिम पंक्ति में दर्ज है। आर्य समाज के कार्यों के लिए उन्होंने मुक्त हस्त से अपने धन का सदुपयोग किया। वे अपने पीछे सुख समृद्धि से भरपूर भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

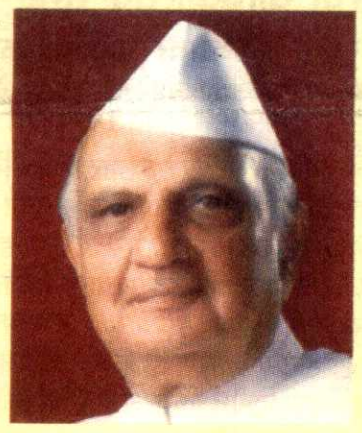

उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हजारों लोगों के अश्रुपूरित नेत्रों के समक्ष किया गया। उनकी स्मृति में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 9 मई, 2017 को रामावातुमल हाल के.सी. कालेज चर्च गेट मुम्बई में सम्पन्न हुई जिसमें आर्य समाज के पदाधिकारियों के अतिरिक्त हजारों गणमान्य लोगों ने उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए उन्हें आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी का लौह स्तम्भ बताया। उन्होंने कहा कि वे एक चिन्तनशील तथा समर्पित आर्य थे। व्यक्तित्व एवं कृतित्व की दृष्टि से आर्य समाज में उनका अभाव हमेशा खटकता रहेगा। हम सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति तथा पारिवारिक जनों को असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं। मेरा उनको शत्–शत् नमन।

– स्वामी आर्यवेश
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य
प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

संस्कृता स्त्री पराशक्तिः "ओ३म्" संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है।

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक : 6 जून, मंगलवार, 2017 से 12 जून, सोमवार 2017 तक
स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, गांव टिटौली, जिला रोहतक (हरियाणा)

पाँच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जाएगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो-कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- वैदिक विद्वानों व विदुषियों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जाएगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जाएंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध जागरूक किया जाएगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाईल अपने साथ न लेकर आएं।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टॉर्च, सर्फेद सूट व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लाएं।
- इच्छुक छात्राएं 100 रूपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश-पत्र अपने माता-पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई तक अवश्य जमा करवाएं। सीटें सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस सात दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातःराशन आदि पर लाखों रूपये खर्च होने हैं। आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कराएं। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास चैक/बैंक ड्राफ्ट युवा निर्माण अभियान अथवा महिला समता मंच के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइन्ड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिए गए दान से कन्या चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक :
युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्
महिला समता मंच एवं स्वामी इन्द्रवेश फांउडेशन

कार्यालय – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)
सम्पर्क नं.– 9416630916, 9354840454 01262.286900

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।